फिर कभी

(काव्य संग्रह)

प्रदीप मिश्र

अनुभूति प्रकाशन
इलाहाबाद

फिर कभी

(कविता संग्रह)

"मध्य प्रदेश साहित्य परिषद् के सहयोग से प्रकाशित"

ISBN 81—86065—17—2

संस्करण : प्रथम १९९५

मूल्य : सत्तर रुपये

प्रकाशक : अनुभूति प्रकाशन
९३, करनपुर, प्रयाग स्टेशन
इलाहाबाद - २११ ००२

मुद्रक : भार्गव प्रेस
९-ए, बाई का बाग
इलाहाबाद

रेखांकन : नवनीत श्रोत्रिय

माँ-पिता
के लिए
सादर ...।

आभार !

स्व. देवेन्द्र कुमार 'बंगाली'
डॉ परमानन्द श्रीवास्तव, डॉ विश्वनाथ प्रसाद तिवारी डॉ. रमेश उपाध्याय, हरीश भादानी, अजय तिवारी, सव्यसाची, डॉ यशिष्ट अनूप तथा प्रमोद कुमार जिनसे जाना समझा और सीखा ।

प्रभु जोशी, संदीप श्रोत्रिय, रजनी रमण शर्मा, विवेक गुप्ता, राजेश महाजन तथा मिलिन्द जिनके सहयोग से सम्भव हुआ यह सग्रह ।

पहल, दस्तावेज, वातायन, नयापथ, उत्तरार्ध, आजकल, कल के लिए, पल प्रतिपल, प्रखर, जरूरी पहल, अक्षरा, वैचारिकी, सुमति, आज की कविताएँ, सानुबंध, सहचर, अंचल भारती, साहित्य मण्डल की पत्रिका (केरल) तथा पंजाब सौरभ पत्रिकाएँ, जिन्होने शब्दो की दुनिया मे प्रवेश करने का आत्मबल दिया ।

प्रदीप मिश्र, इदौर

क्रम

न ही कोई पढ़े इतिहास



फिर कभी बैठेंगे फ़ुर्सत में

फिर कभी

मस्ज़िद मे
अदा करनी है नमाज़
पढ़ना है वेद मंदिरों मे
पाताल लोक मे उतरना है
स्वर्ग मे लगानी है छलाँग

साफ करनी है
मुल्ला जी की दाढ़ी और
पडित जी के जनेऊ का मैल

आख़िरी बच्चे का पेट
दूध से भरना है
फ़सलो पर करना है छिड़काव
कीटनाशक का

इस जर्जरायी हुई व्यवस्था के ख़िलाफ़
अभी लिखनी हैं तमाम कविताएँ

फिर कभी बैठेगे फुर्सत मे
पलाश के नीचे
तुम अँगूठे से कुरेदना धरती
मै तोड़ूँगा नर्म घास की फुनगियाँ ।

ज़िंदा रहने के लिए

किसी मज़दूर के घर
शाम को बनती हुई
मोटी-मोटी रोटियों के प्रति
उसके दिन भर के भूखे
बच्चे की चाह की तरह
मैं चाहता हूँ
तुम्हें ।

धान और गेहूँ के
साथ-साथ
तुमको भी रोपकर
अपने खेत में ।

मैं जता देना चाहता हूँ
लोगों को
कि तुम भी
रोटी की तरह ज़रूरी हो
ज़िंदा रहने के लिए ।

कविताओं पर फैल रही है स्याही

कविताओ मे
बहुत दिनो तक दिखता रहा
हरा पेड़
बहुत दिनों तक मचलती रही
शोख़ लड़की
बहुत दिनों तक उड़ान भरती रहीं
चिड़ियाँ

माँ कातती रही चर्ख़ा
बहतीं रही एक नदी
ठहरा रहा एक पहाड़
बहुत दिनो तक कविताओ मे ।

कविताएँ हँसती-बतियाती रहीं
प्रेम करती रहीं कविताएँ
कविताएँ ही तो हैं
जिनमें दिखता था मुहल्ला, परिवार और
ढेर सारे घर ।

इधर कुछ दिनो से
कविताओ का पेड़ ठूँठ हो रहा है
बुत बन चुकी है लड़की

पस्त हो रही हैं चिड़ियाँ
बंद हो गया है परों का घूमना
धीमा पड़ गया है नदी का वेग
ढह रहा है पहाड़

इधर कुछ दिनों से
कविताओं पर फैल रही है स्याही
लद गई है
एक उदास चुप्पी ।

काम पर निकले हुए बच्चे

जब कोर्स की किताबे नहीं रहीं
पढ़ने के क़ाबिल
मार्क्स गांधी और विवेकानंद
हो गए उपयोग की वस्तुएँ
विश्वसनीय नहीं रहे खिलौने
फूटने लगे पार्कों मे बम
इतनी सी भी जगह नहीं बची शहर मे
कि झपेट कर मारा जा सके गुल्ली पर डंडा

ऐसे समय मे
काम पर न निकले
तब क्या करे बच्चे ?

जब तेज़ी से घटने लगी हो पेड़ों की तादाद
ज्वालामुखियाँ उगलने लगे दावानल
भूख और अनाज मे विलोमानुपात हो जाए
घुसपैठ कर जांए प्रशासन मे दरिंदे
बच्चो को निकलना ही चाहिए काम पर

बल्कि
धुधलके मे ही निकल जाना चाहिए
और लौटना चाँदनी छिटकने पर

काम पर निकलने के बाद
बच्चे हो जाते हैं
ज्वालामुखियों की तरह चंड
भूकंप की तरह उजड्ड
अनाज के समानुपाती
और पेड़ों की तरह शालीन

सिर्फ़
काम पर निकले हुए बच्चों के पास
बचे हैं कुछ सपने
नए-नए मुहावरे गढ़ने की क्षमता
और इतनी मज़बूती
कि जंगल को
तब्दील कर दे हरे-हरे मकानों में ।

(अग्रज कवि राजेश जोशी की कविता पढ़कर)

हँसी की संस्कृति

हँसो खूब हँसो
हँसना तुम्हारा हक़ है

हँसो जैसे हँसता है पौधा
हँसता है शिशु
या फिर जैसे नदी

पौधो के साथ हँसती हैं जड़े
जड़ो की हँसी मे
शामिल होती है पृथ्वी

शिशु को किलकता देख
हँसने लगती है मुरझाई माँ
माँ की हँसी मे शामिल होते है पिता

नदी जब बहती है खिलखिलाती हुई
हँसने लगते हैं उसके किनारे
किनारो की हँसी मे
गुपचुप शामिल होते है
घाटी
संस्कृति
सभ्यताएँ

दरअसल
हँसी दर्ज होती है तरंगो मे
तरंगे वायु पर लदी
फैल जाती हैं वायुमंडल मे

फिर हँसाता है वायुमंडल
वायुमंडल की हँसी मे
शामिल होता है सब कुछ

हँसने की अपनी एक निजी संस्कृति है ।

(वरिष्ठ गीतकार नईम को उनके इकसठवें जन्मदिन पर सादर ....)

पत्थर

पत्थर कभी रोते नहीं
पसीजते है
जिनमे धड़कता रहता है
इतिहास

पत्थर कभी टूटते नहीं
टकराकर बिखर जाते है
या फिर हो जाते है ऊबड़-खाबड़
पत्थरो से नापी जा सकती है
पृथ्वी की आयु

पत्थर कभी नष्ट नहीं होते
पिसकर रेत हो जाते है
जुड़कर बन जाते है पहाड़
और गलकर मिट्टी

पत्थर
वसीयत होते है
एक सभ्यता से दूसरी सभ्यता के बीच ।

पिता होने के एवज़ में

किसी ने दिए सुंदर-सुंदर उपहार
किसी ने आशीर्वाद
किसी की शुभकामनाएँ हैं तुम्हारे साथ
किसी की आँखे शामिल हैं तुम्हारी आँखो मे
तुम्हारे सिर और तपते सूर्य के बीच
कोई तन गया छाता बनकर
पिता होने के एवज़ मे
मैं क्या दूँ तुम्हे
मेरे बच्चे ।

देने के लिए मेरे पास है
दाल-रोटी
जिस पर तुम्हारा हक़ है
सरकारी आवास
जब तक नौकरी करूँगा
बमुश्किल महीना पार करती तनख़ाह
इसमे तन ढँकने के अलावा
कुछ भी नहीं बचेगा तुम्हारे लिए
फिर मै क्या दूँ तुम्हे
मेरे बच्चे !

आशीर्वाद ।
इस हाय-बॉय की सस्कृति मे
इसका चलन ही नहीं रहा

न ही दूधो नहाने की संभावना बची है
न पूतो फलने की

वैसे भी इस लिजलिजे माहौल में
आशीर्वाद / स्नेह
आदर / श्रद्धा
सिर्फ़ अक्षर युग्म होते हैं
और इनकी सार्थकता राष्ट्रभाषा जितनी

अब मेरी आँखो मे नहीं बचा है
कोई हसीन सपना
आँखे अंगारे की तरह तप्त और सुर्ख़ हैं
इनको तुम्हारी आँखों मे शामिल करके
मैं तुम्हारी कल्पना को
नहीं कर सकता बाँझ

इस नापसंद माहौल में
मेरे अंदर हो गए है इतने सुराख़
कि अब कुछ भी आरपार हो जाता है
हवा / पानी / धूप
गाली / चाँटा / अपमान
और न जाने क्या-क्या
फिर कैसे बन सकता हूँ मैं छाता ?

मेरे पास बचे हैं
कुछ असर खो चुके शब्द
कुछ दबी हुई भावनाएँ
बुलंद आवाज़
चिंतित मस्तिष्क
और बहुत बड़ा दिल
जो कुछ भी सह लेने की क्षमता रखता है

हाँ
सिर्फ़ यही सब चीज़े बची है मेरे पास
जो दे सकता हूँ तुम्हे

पिता होने के एवज़ मे
मुझे कुछ देना ही चाहिए पुत्र को ।

मेरे धर्म गुरु

शताब्दियों पूर्व
उग आया था धर्मगुरुओ का झुंड
जिन्होने सिद्ध किया
लोढ़ा गई है मेरी जीभ
मेरा रोना / चिल्लाना / जिद करन
नुकसानप्रद है
समाज के लिए ।

मेरी नस्ल पर उन लोगो ने
काफ़ी अध्ययन किया
और निर्धारित किया गया
मेरा धर्म -
सिर्फ़ हाँ कहना
अन्यथा चुप रहना
अपने वारे मे कुछ नहीं सोचना
घृणा करना भूत-भविष्य से

मेरे धर्म के अनुच्छेदो मे
शामिल किया गया
आधा पेट खाकर, भरपेट मेहनत
पत्नी का खुरदुरापन वढता देखकर
गलना हाथ
वच्चे को ओढाकर बुढापा
मसोराना मन

ख़िलाफ़ उन धर्मभीरूओं के भी

बर्फ़ सी ठंडी साँस
मेरे नथुने मे घुसकर
जब पिघल जाएगी

एक परछाईं से लिपटकर
जब मैं कस लूँगा अपने आप को

हलकी-हलकी दहकती हुई भट्टी के साथ
जब मैं काट लूँगा
जाड़े की एक भरपूर रात

तपते हुए ओठ चूसते-चूसते
जब मै तप्त हो जाऊँगा

फिर लोहार चढ़ाएगा मुझ पर धार
मेरी धार
अमरीका की कूटनीतियो के ख़िलाफ़
कश्मीर के आतंकवादियो के ख़िलाफ
सत्ता के हरामख़ोरो के ख़िलाफ
ख़िलाफ़ उन धर्मभीरूओ के भी
जिन्होने गाँव-घर की बहूबेटियो को
नंगा करके घुमाने की परंपरा का ईजाद किया है।

आधी रात को
दहलीज़ पर लड़खड़ाती बेटी देखकर
बुत बन जाना

मेरे पूर्वजो को
समझा दिया गया था स्पष्ट
धर्म के ख़िलाफ़ होने पर
मौत के फ़तवे जारी कर देता है ईश्वर

भले ही मै बनाता हूँ उनका पवित्र खड़ाऊँ
लेकिन उसकी कीले
नहीं चोएँगी
उनके तलुओ मे टीटनेस

धर्मगुरु
ईश्वर के अवतार होते हैं
और उन्हे आदत होती है
सिर्फ़ झुके हुए सिर देखने की

धर्मगुरु मुतमईन हैं कि
पाँव छूने वाले हाथ
कभी गले तक नहीं उठ सकते ।

ख़िलाफ़ उन धर्मभीरुओं के भी

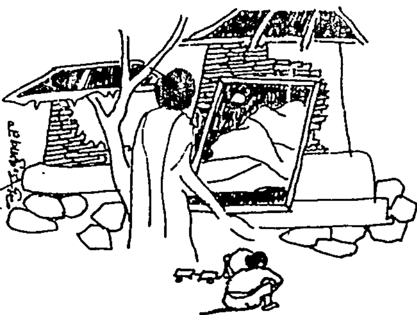
वर्फ़ सी ठंडी साँस
मेरे नथुने मे घुसकर
जब पिघल जाएगी

एक परछाईं से लिपटकर
जब मै कस लूँगा अपने आप को

हलकी-हलकी दहकती हुई भट्टी के साथ
जब मै काट लूँगा
जाड़े की एक भरपूर रात

तपते हुए ओठ चूसते-चूसते
जब मै तप्त हो जाऊँगा

फिर लोहार चढ़ाएगा मुझ पर धार
मेरी धार
अमरीका की कूटनीतियो के ख़िलाफ़
कश्मीर के आतंकवादियो के ख़िलाफ
सत्ता के हरामख़ोरों के ख़िलाफ
ख़िलाफ़ उन धर्मभीरूओ के भी
जिन्होने गाँव-घर की बहूबेटियो को
नंगा करकें घुमाने की परंपरा का ईजाद किया है ।



ड्योढ़ी से क्षितिज तक

निर्माण में जुटा परिवार

उसकी पोटली मे बँधे हैं
नानी के किस्से
माँ के सपने
उसका अपना भविष्य
और दोपहर का भोजन

रेगिस्तान की रेत मे झुलस रहे है
उसके तलुए और
धूप मे चेहरा

वर्षों से कदमताल कर रही है
राजगीर और ईंटो के बीच
सिर पर ईंट के इतने ऊँचे-ऊँचे चट्टे
जैसे ढो रही हो शहर के लिए मन्जिलें

उसकी हथेलियो मे
दबे हुए है चाँद-सितारे
और बदन मे
सुष्मिता और एश्वर्या जैसी न जाने कितनी

उसके मन मे बैठा है राजकुमार
जिसके हाथ की गैती
कर देती है चट्टानो मे सुराख़
वह नींव के लिए पत्थर तैयार करता है ।



ड्योढ़ी से क्षितिज तक

बीज (एक)

जब तक पड़ा था
गहन अंधकार मे
बिना आहट
सोता रहा
बीज की नींद

जब उसे एहसास हुआ
अंधकार के ढीलेपन का
जागा और
रेंगता हुआ
निकल आया प्रकाश मे

जैसे
अंकुरण के बाद
बीज के सुकोमल तने ने
ओढ़ लिया हो / हरापन

वह
हवा से बोलता-बतियाता
प्रकाश पीता हुआ
इतना फैल गया कि
पेड़ बन गया
अब वह नीम की तरह

बीज (दो)

कूड़ो के ढेर
जो दिखाई दे रहे है
चारो तरफ़
सिर्फ़ कूड़ो के ढेर नहीं है
बल्कि प्रयास है
तमाम बिखरे हुए बीजो को
निष्क्रिय करने का

इन ढेरो मे रह-रहकर
पैदा होने वाले कंपन
अहसास करा रहे है
बीजो के सुगबुगाने का ।

एक बरसाती रात के बाद
ये सारे ढेर
मुलायम हो जाएँगे
खेत की तरह ।

उभर आएँगी
हरी-हरी कोपले
पहली बार मायके लौटी
दुल्हन की तरह
चहकती-बहकती ।

बीज (दो)

कूड़ो के ढेर
जो दिखाई दे रहे है
चारो तरफ़
सिर्फ कूड़ो के ढेर नहीं है
बल्कि प्रयास है
तमाम बिखरे हुए बीजो को
निष्क्रिय करने का

इन ढेरो मे रह-रहकर
पैदा होने वाले कंपन
अहसास करा रहे है
बीजो के सुगबुगाने का ।

एक बरसाती रात के बाद
ये सारे ढेर
मुलायम हो जाएँगे
खेत की तरह ।

उभर आएँगीं
हरी-हरी कोपले
पहली बार मायके लौटी
दुल्हन की तरह
चहकती-बहकती ।

मैं और तुम

मै रोपूँगा
धान का नन्हा पौधा
तुम सहला-सहलाकर
खडी करना फसल

मै रोपूँगा
गुलाब की कलम
तुम तैयार करना
फुलवारी

मै गढूँगा दो पहिये-चार पॉव
तुम बुहारना पगडंडियाँ
न मै थकूँगा रोपते-गढते
न तुम थकना सहलाते-सवाँरते

हमे साथ-साथ चलना है
ड्योढ़ी से क्षितिज तक ।

फूलों को इंतज़ार है

अभी-अभी खिले
गुलाब के फूलो को
इंतज़ार है

एक प्रेमी युगल का
जिनके बीच
वे बन सके
सेतु ।

एक माली का
जिसके ममता भरे
हाथो से सीखे
प्रतीक बनना ।

अंगूलीथामे
चलना सीखते हुए बच्चे का
जिसको दे सके
खिलखिलाहट ।

दिप् दिपाने के लिए

सूरज के सामने
टॉगकर काला पर्दा
अपने अनुकूलित परिवेश मे
वे फूले हुए है गर्व से

जबकि उमस
सूखते हुए ओठो पर
लगातार फेर रही है जीभ

हवा
लू बनकर बह रही है
पृथ्वी के इस छोर से
उस छोर तक

पसीना बेचैन है
उनके माथे पर छलकने के लिए

उन्हे नहीं मालूम
समदर भी नहीं पचा पाता है
सूरज की पूरी ऊष्मा
बहुत कुछ शेष रह जाता है
रात भर दिप् दिपाने के लिए ।

दीमक

दीमक
चाट जाएँगे
संस्कृति
किताब
फ़िल्म
और इतिहास

इतिहास मे दीमक लगना
भविष्य की सबसे भयानक ख़बर है ।

कनुप्रिया

एक अदना सा मन
ढुलककर ठहर गया है
तुम्हारी ओट मे

आजकल
तुम्हारी नजरे टहलने लगीं है
रसोई से बैठक तक
बैठक से अटारी तक
ओट / झरोखे
खोजती हुई

सपने पसर गए है
अतरिक्ष से अन्तस तक

पलके सीखतीं जा रहीं है
दिन-प्रतिदिन अदब

एक चाहा क्षण देखने के लिए
तुम्हारा घटो अनचाहा देखना
मुझे आतकित करता है कनुप्रिया ।

कहीं ठहरा हुआ अदना
सुगबुगाने तो नहीं लगा है
तुम्हारी ममतामई छॉव मे ।

समाचार

समाचार
टपकते है
चेहरो से बूँद-बूँद
और जम जाते हैं
अख़बार के पन्नो पर
अक्षरो की शक्ल मे क़ैद

सिर्फ़
सुबह के नाश्ते का
साथ देने के लिए
या फिर
बसो / रेलगाडियो
होटलो / स्टेशनो
और पान की गुमटियो पर
अचार की तरह
प्रयोग किए जाने के लिए

काश !
समाचार
अख़बार के पन्नों पर
जमने से पूर्व ही
ज़िंदा होने का
प्रयास करते

काश !
समाचार

एक अदना सा
ढुलककर ठहर
तुम्हारी ओट मे

आजकल
तुम्हारी नजरे टह
रसोई से बैठक
बैठक से अटारी
ओट / झरोखे
खोजती हुई

सपने पसर गए
अतरिक्ष से अन्

पलके सीखतीं
दिन-प्रतिदिन अ

एक चाहा क्षण
तुम्हारा घटो उ
मुझे आतंकित

कहीं ठहरा हु
गुनगुनाने तो
तुम्हारी

अभी भी

अभी भी
बर्फ़ के नीचे दबी पड़ीं
बहुत सी सभ्यताएँ
सुरक्षित हैं
जिनके बारे मे
नहीं जानते है अख़बार ।

अभी भी
पहाड़ो के सीने मे दफ़न है जज्बात
जिनको अनुभूत नहीं किया है
पर्वतरोहियो ने ।

अभी भी
धरती के गर्भ मे छुपीं है
अँधेरी गुफाएँ
जिनके बारे मे नहीं जानते हैं
वैज्ञानिक ।

अभी भी
तमाम आकाशगगाएं
खोजी जानी है
और बारमूडा त्रिकोण का
रहस्य खुलना बाक़ी है ।

सुबह के नाश्ते का
साथ देने के बजाए
फँस जाते गले मे
बनकर हड्डी

काश !
समाचार
अचार की तरह
प्रयोग होने के बजाए
हरी मिर्च हो जाते ।

अभी भी

अभी भी
बर्फ़ के नीचे दबी पड़ीं
बहुत सी सभ्यताएँ
सुरक्षित हैं
जिनके बारे मे
नहीं जानते है अख़बार ।

अभी भी
पहाड़ो के सीने मे दफ़न है जज्बात
जिनको अनुभूत नहीं किया है
पर्वतरोहियो ने ।

अभी भी
धरती के गर्भ मे छुपीं हैं
अँधेरी गुफाएँ
जिनके बारे मे नहीं जानते है
वैज्ञानिक ।

अभी भी
तमाम आकाशगगाएं
खोजी जानी है
और बारमूडा त्रिकोण का
रहस्य खुलना बाक़ी है ।

चंदा मामा

मामा जो खा जाता था
बच्चो का दूध-भात
टाँग दिया गया है खेत मे
बिजूका बनाकर

आजकल कौव्वे उड़ा रहा है ।

चाहता हूँ

चाहता हूँ
ऐसी कविता लिखी जाए
जो बलि के ठीये पर पड़े
बकरे की आँख बन जाए
और कसाई के मगज मे
एक भयानक सपना बनकर
समा जाए

चाहता तो यह भी हूँ कि
कविताएँ अमावस की रात मे
लिखी जाएँ / जिन्हे
पूर्णिमा तक पढ़े हम सब

मेरी चाह मे
यह भी शामिल है कि
कविताएँ एक और सूरज गढ़े
और उसे समुद्र के उस छोर पर
ठीक उस समय टाँग आएँ
जब बूढ़ा सूरज डूब रहा हो ।

शिनाख़्त

भागते समय छूटा हुआ रुमाल
पजो के निशान
खून के धब्बे
सब कुछ बाकी है
शिनाख़्त के लिए

अभी और भी सुबूत ज़िंदा है
पेड़ो की खोह मे
धरती के गर्भ मे
घरो की मुँडेर पर
खलिहान के कउड़े मे

जो साबित कर देगे
अपराध को
एक न एक दिन
पकड़ा जाएगा अपराधी ।

खिड़कियाँ

खिड़कियाँ
सिर्फ़ खुलती बद नहीं होतीं
बल्कि रिश्ता जोड़ती है
एक मकान से
दूसरे मकान का

नजर रखतीं है
सड़क पर
गली मे

खुली खिड़की वाले मकान
जरूरत हैं मुहल्ले की

खिड़कियाँ चाहे जितनी छोटी हो
इनका सिर्फ़ खुलना ही बहुत है ।

माँ

माँ पीती रहती है
सूरज की किरणे
और अधकार

धड़कती रहती है
समय के साथ टिक्   टिक्

बोती रहती है बीज
सींचती रहती है जमीन

माँ की हथेलियो पर
घूम रही है पृथ्वी
उसकी आँखो मे
चमक रहा है सूरज
उसके इर्द-गिर्द है ब्रह्माड !

उलीचती रही पानी

उसने कहा
दूसरो को खुश रखो
तुम भी खुश रहोगे
और उम्र भर रही उदास

उसने सोचा
तूफ़ान मे
चाहे इधर-उधर हो जाएँ
पृथ्वी के ध्रुव
दरार नहीं पड़नी चाहिए दिल पर
और उम्र भर छुपाती रही दिल की बात

उसने महसूस किया
पानी नाक तक चढ़ ज़ाए
तब उलीच देना चाहिए
और उम्र के अंत तक
उलीचती रही पानी ।

जब घर से दूर होता हूँ

हर रात
माँ की गोद मे सोता हूँ

पिता जी समझाते रहते है
ऊँच-नीच और
चलने का सलीक़ा

हर श्रावण की पूर्णिमा पर
लिफ़ाफे से निकलकर बहन
बाँधती है रक्षा
लगाती है टीका
और मै रख देता हूँ
उसके सिर पर हाथ

भाई का कधा
कहीं भी उग आता है अनायास
जिस पर झूलकर हाँफता रहता हूँ घटो

फिर भी
घर से दूर होना अखरता है
गुदगुदाते सपनो भरी नींद के
टूट जाने जैसा ।

जहाँपनाह !

जहाँपनाह ।
कल फिर नहीं हुई सुबह
बावजूद आपकी घड़ी मे अलार्म बजने के

जहाँपनाह ।
यह कैसी रात है
छिटकने लगी है चाँदनी छिटपुट
जबकि पसन्द नहीं है आपको चाँदनी रात

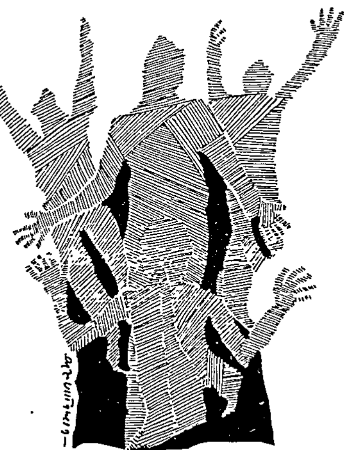
जहाँपनाह सुना !
कुछ लोग सूरज को भड़का रहे हैं
कहीं आपकी हवेली से आजाद होकर
टंग न जाये क्षितिज पर

जहाँपनाह ।
इस ग्रह के लोग होते जा रहे है बदतमीज
अच्छा तो यह होगा कि
आप अपने लिए दूसरा ग्रह तलाश ले
यहाँ अब ऐसा कुछ भी नहीं बचा है
जिसे आपने भरपूर भोगा न हो
यह ग्रह अब नहीं रहा आपके लायक

जहाँपनाह !
यूँ करे आप चन्द्रमा पर चले जाये
किन्तु वहाँ आपका वजन घट जायेगा पाँच बटा छ
फिर क्यो न चले जाये मंगल पर
मगल ग्रह पता नहीं कैसा है
कहीं वहाँ पर आपका दम न घुट जाये

हुजूर !
आप उपग्रहो की तरह अन्तरिक्ष मे चक्कर काटने से
सूरज पर तो पिघलकर पानी हो जायेगे
फिर क्या करेगे आप ?

कैसे ताल-मेल बिठायेगे इस भूखे नगो की भीड़ से
बहुत बेवकूफ होते है ये लोग
अपनी पर आ जाये तो
अन्नदाता को भी नहीं छोड़ते है ।



न ही कोई पढे इतिहास

न ही कोई पढ़े इतिहास

आम, इमली, बरगद, जामुन
दब गए थे
खर-पतवार में

भौंरे अनमने फिर रहे थे
इस फूल से उस फूल
नष्ट हो गयी थी फूलो की उर्वरा शक्ति

झर गए थे
तितलियो के पख से
सारे रग

चिड़ियाँ जी रहीं थी
विस्थापितो की तरह

घट गया था आसमान का क़द
पृथ्वी सिकुड़ कर नारंगी हो गई थी ।

ऐसा ही कुछ लिखा जाएगा
जिसे रटती रहेगी तमाम अगली पीढ़ियाँ
इतिहास के नाम पर

हो सकता है
तब कोई बच्चा यह भी पूछे
कैसे होते थे फूल
क्या भौरे के भी हाथ-पाँव थे
तितलियो के पख मे
कौन सा रग भरा रहता था
या कैसी होती थीं चिड़िया ?

यह भी हो सकता है
तब तक सवाल-पूछने का
रिवाज ही न बचे
न ही कोई पढ़े इतिहास ।

जनतंत्र

मेज के ठीक बीचो-बीच
लाल कपड़े मे लिपटी
एक सजिल्द मोटी सी किताब
किताब के पड़ोस मे रखी धूप बत्ती
जो सुलग-सुलगकर भर रही है
वातावरण मे गंधहीन धुँआ
और मेज के पाँव की थरथराहट
बढ़ती जा रही है लगातार

मेज के ठीक पीछे बैठी ससद
अपनी बशी मे फँसाए चारा
नज़र रखे हुए है किताब पर
सामने बैठा हुआ है
एक बहुत बड़ा दर्शक समूह
चड़ड़-चड़ड़ मूँगफली फोड़ता हुआ

देख रहा है
यह खेल
पहाड़ की चोटी पर उकड़ू बैठा
हुक्का सुड़कता
बूढ़ा आदमी

बूढ़े की दाहिनी तरफ़
अलसाई हुई लेटी है
हरी-हरी दूबो वाली घाटी
बूढ़े की अनुभवी आँख
जब बशी और किताब के
अवैध सबध को
बर्दाश्त करते-करते
तपकर सुर्ख़ हो जाएगी

तब वह
हरी-हरी दूबो वाली घाटी से
पिएगा ऊर्जा
फिर दम लगाकर सुड़केगा हुक्का
जिससे खिल उठेगे अगारे
उछलने-कूदने लगेगी चिंगारियाँ
जिनको हॉकती हुई ले जाएगी हवा
ससद किताब और समूह के बीच

बूढ़ा आदमी
शताब्दियो पूर्व बुढ़ा गया था
किंतु मरा नहीं
अभी कमजोर नहीं हुए है
उसके फेफड़े
न ही उसकी झुर्रियाँ हताश है ।

सम्बंध और विश्वयुद्ध

सम्बंध समाचार होते है
कभी बनते-सुधरते है
कभी बिगड़ते-टूटते हैं
जैसे भारत-पाक
इरान-इराक
श्वेत-अश्वेत

सम्बंध
जब बनते-सुधरते है
तब पसीने से तर रोटी की
डकार आती है
और भरपूर नींद.

सम्बंध
जब बिगड़ते-टूटते है
तब अकाल पड़ जाता है
पैदा होने लगते है विचित्र रोग
बे असर होने लगता है इलाज

कक्षा मे
मास्टर से पूछता है बच्चा
अमरीका-कुवैत या तीसरी दुनिया के देशो के
बीच के सम्बंध की परिभाषा

मास्टर मुड़ते है
श्यामपट की तरफ
चाक से दर्ज करते तारीख़ और दिन
इतने मे वज जाती है घटी

सम्वधो की परिभाषा
रटते हुए बच्चे
छूट जाते है
कक्षा मे

किसी सुबह अख़वार मे छपता है
तमाम देशो के बीच सतुलन विगडा
सम्वधो ने खोया अस्तित्व

बच्चो ने पुन रटना शुरू किया
सम्वध जब अस्तित्व खोते है
तब विश्व युद्ध होता है ।

उस दिन के बाद

सुनकर
मंदिर की टन् . टन्
थोड़ी और चिनक जातीं हैं
आले मे रखी मूर्तियाँ

सुनकर
मुल्ला की आजान्
फड़फड़ाने लगता है
दीवार पर टँगा कलेंडर

दिखाई नहीं पड़ता कोई हिंदू
जबकि परिषद समाचारो मे है
न हुई किसी मुसलमान से मुलाक़ात
फिर भी कमेटियाँ
लगातार जारी कर रही हैं फ़रमान

न पढ़ी गई नमाज़
न उतारी गई आरती
छः दिसंबर के बाद ।

छः दिसंबर के बाद
सबसे ज़्यादा परेशान हैं
देश के बच्चे
गड्मड् हो गई है
उनकी इतिहास की किताब ।

(इस सदी का कलंक छः दिसंबर उन्नीस सौ बयानवे)

जनतन्त्र का जन

कुछ भी ओढ़कर
महसूस कर लेता है
कबल की गर्मी

फुटपाथ को
अगुलियो की पोर से टोकर
मजे ले लेता है
स्पज वाले गद्दे का

दाँत भींचकर
ले-लेता है
अपने अपमान का बदला

आधी रोटी के ऊपर
दो-तीन लोटा पानी चढ़ाकर
डकारता है
मदिर के पुजारी की तरह

ऑख मूँदकर
जी लेता है
मनचाही ज़िंदगी ।

बलात्कार

घन घना उठता है गिरिजाघर मे घंटा
आरती का स्वर हूँकार मे बदल जाता है
अज़ान जगा देता है मुहल्ला
फट जाता है आसमान
आड़ी-तिरछी घूमने लगती है पृथ्वी

जब गूँगे हो जाते हैं लड़की के शब्द
और वह गिन रही होती है
अपने बदन पर उभरते
रक्ताभ खरोच ।

गाँव (दो)

मस्तिष्क पर पोत दिया गया है
केसरिया रग
आँत वैचारिक हैज़े की
चपेट मे है
तलुए घिसकर
संवेदनशून्य हो गए हैं

फिर भी पौ फटते ही
कुनमुनाने लगता है गॉव

गाँव अभी ज़िदा है ।

कोलतार पीकर
अकड़ गई है / पगडडियाँ
लुप्त होती जा रही है
चूल्हा फूँकने की आदत

फिर भी
शाम ढलते ही
लोग लौटते है घर
सुगबुगाता है चूल्हा

गाँव (एक)

पगडडियों मे धँसे
पावो के निशान
लथपथ थे
पसीने से

गोबर पाथती हुई
साँवली कुसुम
चोरी-चोरी देख रही थी
छरहरा नीम
नीम की फुनगी पर बैठा घीसू
पसरा हुआ था
गोबर से गाँव की छोर तक

चौपाल जमीं हुई थी
दलान बुहारे जा रहे थे
कौवे सूचना बॉट रहे थे
बच्चे गुल्ली-डडा खेल रहे थे
खलिहान की आँख टिकी हुई थी
खेत मे खड़ी फसल पर

पिछली गर्मी से इस गर्मी के बीच
कितना बदल गया
कितना सिकुड़ गया
कितनी दरारे पैदा हो गईं गाँव मे
गाँव अब सदियो पुराने किले की तरह हो गया है

गाँव (दो)

मस्तिष्क पर पोत दिया गया है
केसरिया रग
आँत वैचारिक हैज़े की
चपेट मे है •
तलुए घिसकर
संवेदनशून्य हो गए हैं

फिर भी पौ फटते ही
कुनमुनाने लगता है गाँव

गाँव अभी जिंदा है ।

कोलतार पीकर
अकड़ गई है / पगडडियाँ
लुप्त होती जा रही है
चूल्हा फूँकने की आदत

फिर भी
शाम ढलते ही
लोग लौटते है घर
सुगबुगाता है चूल्हा

गाँव अभी ज़िंदा है ।

खेत मेड़ो की गिरफ़्त मे है
खलिहान का चेहरा आशंकित है
घर नीले पड़ते जा रहे हैं
भोथराती जा रही है
हल की धार

फिर भी
अनाज पैदा होता है
त्यौहार मनाए जाते है
दूल्हा घोड़ी चढ़ता है

बहुत कुछ गर्म है
अभी ठंडा नहीं पड़ा है / गाँव

गाँव अभी ज़िंदा है
खेत
हल
मुट्ठियो मे ।

सावन

मैदान हरे-भरे हो जाएं
घास ओढ़कर
महक रहीं हो चिड़ियाँ
झूम रहे हो पेड़
बादलो से झर रही हो बर्फ़ीली फुहार
समझो सावन आ गया ।

हिंडोलो की नजरें मदमस्त हो जाए
कजरी कानो मे यूँ पड़े जैसे
चुड़ियो से लदे हाथ की खनक
पेड़ो की सरसराहट मे शामिल हो जाए
पायल की रुन झुन
और खुमारी बिखर जाए परिवेश मे
समझो सावन आ गया ।

यह सब कुछ पढ़ते-लिखते
बूढ़ी हो गयी मेरी समझ
लेकिन नहीं आया ऐसा सावन
और जो आया वह इतना भयानक
कि गला दिया मेरा घर
उठा ले गया छोटे भाई को लकड़बग्घे की तरह
बुझा गया चुल्हा ।

गाँव अभी ज़िंदा है ।

खेत मेड़ो की गिरफ़्त मे है
खलिहान का चेहरा आशंकित है
घर नीले पड़ते जा रहे हैं
भोथराती जा रही है
हल की धार

फिर भी
अनाज पैदा होता है
त्यौहार मनाए जाते हैं
दूल्हा घोड़ी चढ़ता है

बहुत कुछ गर्म है
अभी ठंडा नहीं पड़ा है / गाँव

गाँव अभी ज़िंदा है
खेत
हल
मुट्ठियो मे ।

सावन

मैदान हरे-भरे हो जाएं
घास ओढ़कर
चहक रहीं हो चिड़ियाँ
झूम रहे हो पेड़
बादलो से झर रही हो बर्फ़ीली फुहार
समझो सावन आ गया ।

हिंडोलों की नजरें मदमस्त हो जाए
कजरी कानो मे यूँ पडे जैसे
चुड़ियो से लदे हाथ की खनक
पेड़ो की चरमराहट मे शामिल हो जाए
पायल की रुन झुन
और खुमारी बिखर जाए परिवेश मे
समझो सावन आ गया ।

यह सब कुछ पढ़ते-लिखते
बूढी हो गयी मेरी समझ
लेकिन नहीं आया ऐसा सावन
और जो आया वह इतना भयानक
कि गला दिया मेरा घर
उठा ले गया छोटे भाई को लकड़बग्घे की तरह
बुझा गया चुल्हा ।

उसके पास ढेर सारे पुलिंदे हैं

उसके अदर प्यास है
कोयल की कूक की

उसका चेहरा
सवालो का गुच्छा है
चुलबुली आँखे
मनाती रहती है
त्यौहार

यह खुश होता है
उदास होता है
अपनी प्रतिबद्धता के अनुसार

उसके पास ढेर सारे पुलिंदे है
जिनको बिछाकर फ़र्श पर
करवटे बदलता है रात भर ।

जानता है
दरपन के उस पार टॅगी
झुर्रियाँ कब मुस्कराती है
कब खिलती है कलियाँ

फिर भी तय है
माँग का भरा जाना
आशीर्वाद पाना
उम्र का ढलना ।

तय है
घर का बसना
चिराग का जलना
रात का गहराना और
छँट जाना

तय है
चौथे से सातवे पहर के बीच
एक कविता का होना ।

(अनुज नरेंद्र-मीना के लिए)

उसके पास ढेर सारे पुलिंदे हैं

उसके अंदर प्यास है
कोयल की कूक की

उसका चेहरा
सवालो का गुच्छा है
चुलबुली आँखे
मनाती रहती है
त्यौहार

वह खुश होता है
उदास होता है
अपनी प्रतिबद्धता के अनुसार

उसके पास ढेर सारे पुलिंदे हैं
जिनको बिछाकर फ़र्श पर
करवटे बदलता है रात भर ।

जानता है
दरपन के उस पार टँगी
झुर्रियाँ कब मुस्कराती है
कब खिलती है कलियाँ

फिर भी तय है
माँग का भरा जाना
आशीर्वाद पाना
उम्र का ढलना ।

तय है
घर का बसना
चिराग़ का जलना
रात का गहराना और
छँट जाना

तय है
चौथे से सातवें पहर के बीच
एक कविता का होना ।

(अनुज नरेंद्र-मीना के लिए)

उसके पास ढेर सारे पुलिंदे हैं

उसके अदर प्यास है
कोयल की कूक की

उसका चेहरा
सवालो का गुच्छा है
चुलबुली आँखे
मनाती रहती हैं
त्यौहार

वह खुश होता है
उदास होता है
अपनी प्रतिबद्धता के अनुसार

उसके पास ढेर सारे पुलिंदे हैं
जिनको बिछाकर फ़र्श पर
करवटे बदलता है रात भर ।

जानता है
दरपन के उस पार टँगी
झुर्रियाँ कब मुस्कराती है
कब खिलती है कलियाँ

नुमाइश

आइए हुजूर !
फीता काटिए हुजूर !
आपकी ही कृपा से
लगी है यह नुमाइश

नुमाइश
मुँडेर पर टगी हुई आतो की
यथार्थबोध से चू पड़ीं आखो की
भूख की तरह बेसब्र सवालो की
अवसादो मे फसी लचर-लचर बुढ़िया आस की

इस नुमाइश मे
इतनी पण्डाले हैं कि
सबको दर्शन लाभ देते-देते
आप थक जायेगे हुजूर !

हुजूर !
कन्धे पर कबाड़ लादे बचपन सा वर्तमान
पागल हो गया है इस नुमाइश मे
वह हमेशा खुद को ही नहीं नोचता-खसोटता
कभी-कभी दूसरो पर भी पत्थर फेकता है ।

हर शाम जब वह लौटता है दफ़्तर से
अपनी हथेलियो का ताप
सौपता है पत्नी के गालो को
सेकी जाती है रोटियाँ

रोटी के एक-एक कौर से
वह चूसता है इतनी ऊर्जा
कि अगले दिन घर लौटने तक
बचा रहे उसकी हथेलियो मे ताप ।

(रजनी रमण के लिए)

नुमाइश

आइए हुजूर !
फीता काटिए हुजूर !
आपकी ही कृपा से
लगी है यह नुमाइश

नुमाइश
मुँडेर पर टंगी हुई आतो की
यथार्थबोध से चू पड़ीं आखो की
भूख की तरह बेसब्र सवालो की
अवसादो मे फंसी लचर-लचर बुढ़िया आस की

इस नुमाइश मे
इतनी पण्डालें है कि
सबको दर्शन लाभ देते-देते
आप थक जायेगे हुजूर !

हुजूर !
कन्धे पर कबाड़ लादे बचपन सा वर्तमान
पागल हो गया है इस नुमाइश मे
वह हमेशा खुद को ही नहीं नोचता-खसोटता
कभी-कभी दूसरो पर भी पत्थर फेकता है ।

अच्छा हो
आप फीता काटकर उड़ जाये आकाश मे
और लौट जाये वापस
अपने वातानुकूलित दड़बे मे

हुजूर !
वातावरण हिंसक होता जा रहा है
राम की खडाऊँ की तरह
आप भी अपनी कैंची भिजवा दिया करे ।

अभी ज़िंदा है

सूरज की किरणे
लौट जातीं है
जिस दीवार से
टकराकर

उसके पीछे
रहता है
एक बुड्ढा

जो लगातार
खाँस-खाँसकर
चील-कौयो को
एहसास
दिलाता रहता है / कि
यह अभी ज़िंदा है ।

•

दंगे के बाद

ठंडा चूल्हा
कितने दिनो तक अस्तित्व मे रहेगा
औधे पड़े भगौने / उल्टी अलमारी
अधजला पोस्टर / कराहती दीवारे
और टूटा पालना
देखने-सुनने की विवशता
अभी कितने रोज तक बनी रहेगी
आम-इमली खाकर
कितने रोज तक जिंदा रहा जा सकता है ?

ये सवाल
उसकी स्लेट पर लिखे है
और वह झॉक रहा है
खिड़की के बाहर ।

खिडकी के बाहर
पुलिस की सीटी
बेत की मार
सड्क का सूनापन
आतकित बाजार
वह सोच रहा है
अभी कितने रोज बाक़ी होगे ?

स्कूल की घटी सुनने मे
कचे खेलने मे
और बाग से अमरूद चुराने मे ।



प्रदीप मिश्र

जन्म :01मार्च 1970 (गोरखपुर) उ.प्र.

शिक्षा : विद्युत अभियंत्रण में पत्रोपाधि स्नातकोत्तर (हिंदी) में अध्ययनरत ।

संप्रति : सरकारी नौकरी, फिलहाल पत्नी रन्जू तथा पुत्र शुभम् के साथ इन्दौर में निवास ।

"भोर सृजन-संवाद" नामक साहित्यिक पत्रिका का संपादन एवं संचालन ।

महत्वपूर्ण पत्र पत्रिकाओं में कविताएँ कहानी तथा आलेख प्रकाशित ।

संपर्क : 31/5 बी टाइप,केट कॉलोनी, प्रगत प्रद्यौगिकी केंद्र, केट - उपडाकघर इन्दौर - 452 013 (म.प्र) ।

स्थाई पता : अशोक नगर, हुमायुँपूर (उत्तरी), डाक : गोरखनाथ,गोरखपुर पिन : 273 015 (उ.प्र) ।